Toppersnotes
Unleash the topper in you

UP-PCS

UPPSC सम्मिलित राज्य/प्रवर अधीनस्थ सेवा परीक्षा

पेपर - 4 || भाग - 1

नीतिशास्त्र

SIERRA INNOVATIONS

विषय-सूची

1.	परिचय	1
2.	नियतिवाद	5
3.	अनैतिकता	11
4.	धार्मिक और अनैतिक	13
5.	मूल्य और चेतना	22
6.	भारतीय दर्शन	29
7.	मनु दार्शनिक	35
8.	चार्वाक	38
9.	महात्मा गांधी	40
10.	पंचव्रत	41
11.	पश्चिमी नीति मीमांसा	43
12.	सुकरात	45
13.	पश्चिमी नीतिशास्त्र	49
14.	उपयोगितावाद	56
15.	काण्ट	61
16.	हीगेल	63
17.	मनोविज्ञान	67
18.	बुद्धिलब्धि (I.Q)	69
19.	भावनात्मक बुद्धिमता	73
20.	मनोवृत्ति	77
21.	अनुनयन	85

परिचय

नीति अखण्डता तथा अभिक्षमता

ETHICS INTEGRITY AND APTITUDE

मनोवृत्ति (Attitude):- किसी विषय, विशेष पर नकारात्मक या सकारात्मक व्यवहार ही Atitude है ।

Aptitude:- किसी व्यक्ति विशेष की क्षमता व रूझान के आधार पर क्षेत्र विशेष में उपलब्धि की प्राप्ति करना तथा अच्छा प्रदर्शन करना ही अभिक्षमता कहलाता है ।

1. किसी विशेष क्षेत्र में जाने योग्य है या नहीं इसका परीक्षण करना है ।
2. अभिक्षमता ऐसा होना चाहिए । जिससे समस्या की गहराई को समझा जा सके ।

भावनात्मक समझ (Intelligency): – किसी दी हुई परिस्थिति में निर्णय लेने की क्षमता 'भावनात्मक समझ' कहलाती है ।

दी गई परिस्थतियों में उपलब्ध संसाधनों का प्रयोग करके समस्या का हल निकालना "बुद्धिमता" कहलाती है ।

Emotional intelligency:-

1. दी गई परिस्थितियों में उपलब्ध संसाधनों के साथ दूसरों के भावनात्मक रूप कों समझकर समस्या का हल निकालना ही भावानात्मक समझ कहलाती है ।
2. दूसरों की मनःस्थिति को समझकर अधिकतम लाभ प्राप्त करना और समस्या का समाधान निकालना

डेनियल गोलमेन :–"भावानात्मक समझ" साधारणतः बुद्धिमता की तुलना में ज्यादा उपयोगी है ।

थॉमस हॉब्स :– "प्रत्येक मनुष्य स्वार्थी प्राणी है" अगर कोई व्यक्ति आपके लिए हाथ भी उठाता है तो निश्चय ही उसका स्वार्थ उसमें नीहित है, इसका मानना है कि माँ भी शुद्ध रूप से स्वार्थी है ।

कार्ल मार्क्स :– मनुष्य मूल रूप से परमार्थी है ।

नीतिशास्त्र Ethics

- सांस्कृतिक सापेक्षवाद की शुरूआत 1920 के आस–पास मानी जाती है ।
- जातीयतावाद Ethno Centrism:–जातीयतावाद का अर्थ है कि अपेन ही रीति रिवाजों को मानक मानकर दूसरे के रीति–रिवाजों पर सही या गलत का निर्ण लेना । ये निर्णय सामान्यतः नकारात्मक होते है ।
- सांस्कृतिक सापेक्षवाद Cultural Relativism:- सांस्कृतिक सापेक्षवाद किसी रीति–रिवाज को इसके पर्दो में समझना होता है तथा किसी रीति–रिवाज को मानक मानकर कोई निर्णय नहीं लिया जाता है ।
- परजाति केन्द्रवाद Xeno-Centrism:- दूसरे समूहो को केन्द्र में रखकर अपने समूहों का आंकलन करना ।
- जरूरत से कम विश्वास होता है ।
- अपना मूल्यांकन किसी दूसरे के आधार पर करना ।

1955–Hindu Code Bill उत्तराधिकारी अधिनियम

संकल्प स्वतंत्रता (Freedom of will) –

जब निर्णय करते समय स्वाधीनता हो कि मै निर्णय करूँ या नहीं अर्थात निर्णय् करने की स्वंतत्रता हो ।

निर्णय करने से पहले हमें सामने वाले की परिस्थिति में खुद को रखकर देखना चाहिए ।

“किसी व्यक्ति की नैतिक और अनैतिक मूल्यो में निर्णय करने की क्षमता को ‘संकल्प स्वंतत्रता’ कहते है ।”

सिग्मन फ्रायड “ऐसा कोई मनुष्य नहीं है कि वह मन के अनुसार स्तर पर भी नैतिक हो”

बिना कर्म के हम किसी के नैतिक या अनैतिक होने का दावा नहीं कर सकते हैं ।

कर्म Action

- Voluntary स्वैच्छिक कर्म
- Involuntary अनैच्छिक कर्म
- Moral action नैतिक कर्म
- Immoral Action अनैतिक कर्म
- Non Moral Action निर्नैतिक कर्म

संकल्प स्वंत्रत विद्यमान है जैसे–छींक आना, गिलास का अचानक टूटना ।

स्वैच्छिक कार्य Voluntry Action

इसे दो भागो में बाँटा गया है ।

- Conseous Voluntary Action (सजग स्वैच्छिक कर्म)
- Habitual voluntary Action - (आदतन स्वैच्छिक कर्म)
  - यह कर्म भी शुरूआत में सजग कर्म माना जाता है ।

नैतिक कर्म (Moral Action)

- उचित कर्म
- ये दोनों स्वैच्छिक कर्म है
- अनैतिक कर्म (Immoral Actio)
- निर्नैतिक कर्म (Non Moral Action) :– यह अनैच्छिक कर्म में आता है ।
- संकल्प स्वतंत्रता का अभाव होता है ।
- यह न तो नैतिक है और न ही अनैतिक ।
- उचित और अनुचित से परे ।

संकल्प की स्वतंत्रता:– नैतिकता के क्षेत्र में संकल्प की स्वतंत्रता एक आधार मूलधारणा है । इसका अर्थ है जो व्यक्ति ने कर्म किया है, उसको चयन करने की स्वाधीनता उसके पास थी ।

दूसरे शब्दों में, यदि किसी व्यक्ति ने कोई कार्य सोच–समझकर अपने पूरे होश–हवास में किया है, तो हम कहेगें की उसके पास संकल्प की स्वंतत्रता थी । महान जर्मन दार्शनिक ‘कांट’ ने संकल्प की स्वंतत्रता को नैतिक व्यवस्था के तीन अनिवार्य तत्वों में से एक बताया है ।

व्यक्ति जो भी कार्य करता है वे या तो स्वैच्छिक (Voluntary) या अनैच्छिक (Involutory) होता है, स्वैच्छिक कर्म वे है जिनके मूल में संकल्प की स्वंतत्रता विद्यमान थी, जबकि अनैतिक कर्मो के संबंध में माना जाता है कि वे संकल्प स्वंतत्रता से रहित थे ।

1. छोटे बच्चो के कार्य
2. विक्षिप्त व्यक्ति के कार्य
3. प्रतिक्षेप (Regleex Action) जैसे – छींकना, चौंकना
4. अचेतन या सम्मोहन की स्थिति में किये गए कर्म
5. प्रकृतिमूलक कर्म, जैसे – डरना
6. दबाव या बाह्यता में किये गये कर्म
7. आकस्मिक रूप से किये गये कर्म जैसे – हाथ से गिलास छूटना

प्रश्न - मूल्य शाश्वत होते है या समय के मूल्य के साथ बदल जाते है ?

उत्तर - बदल जाते है।

संकल्प की स्वतंत्रता थी या नही यह निर्धारित करना बहुत जरूरी होता है क्योंकि अगर यह थी या नहीं हम उस कर्म को नैतिक या अनैतिक नहीं कह सकते इसे (Non Moral) निर्नैतिक कर्म ही कहना होगा ।

संकल्प की स्वतंत्रता थी या नहीं इसका फैसला निम्नलिखित कसौटियों से हो सकता है ।

1. कार्य करने की शारीरिक क्षमता की उपस्थिति ।
2. कार्य करने की मानसिक क्षमता ।
3. कार्य से सम्बधित ऐसे विकल्प होने चाहिए कि वह किसी कर्म को करने या न करने का निर्णय कर सकता है ।

सम्बन्धित प्रश्न –

प्र.1. नैतिकता से आप क्या समझते है । यह आत्मनिष्ठ होती है या वस्तुनिष्ठ ?

प्र.2. नैतिक प्रतिमान किन आधारों पर निर्धारित होते है । नैतिक प्रतिमान देश और काल के सापेक्ष होते है या उनसे मुक्त कुछ लोग मूल्य को शाश्वत मानते है । जबकि कुछ अन्य के अनुसार मूल्य परिस्थितियों के अनुसार बदलतें रहते है । इस सम्बन्ध में आपकी क्या राय है ?

प्र. 3. किसी समाज के लिए नैतिक प्रतिमान/नैतिक मानदण्ड या नैतिक व्यवस्था क्यों आवश्यक है ? क्या यह मानना पर्याप्त नही है कि हर व्यक्ति विवेकशील होता है और वह स्वयं अपने लिए उचित कर्मो का निर्धारण कर सकता है ?

प्र. 4. क्या हमारे सभी कार्य नैतिक या अनैतिक होते है या कुछ कार्य ऐसे भी होते है जो न नैतिक हो और अनैतिक अपने जीवन के उदाहरण देकर स्पष्ट करें ?

प्र. 5. संकल्प की स्वंतत्रता से आप क्या समझते है, नैतिकता को समझने तथा किसी व्यक्ति के नैतिक कर्मो के मूल्यांकन के लिए यह क्यों जरूरी है ?

प्र. 6. नैतिक होने और धार्मिक होने में क्या सम्बन्ध है ? क्या बिना नैतिक हुए धार्मिक और बिना धार्मिक हुए नैतिक हुआ जा सकता है । उदाहरण देकर स्पष्ट करें ?

प्र. 7. प्रत्येक नैतिक व्यवस्था और नैतिक मानदण्ड गहरे अर्थों में अनैतिक होता है । उदाहरण देकर इस कथन की व्याख्या करें ।

प्र. 8. नैतिक व्यवस्था के व्यक्ति और समाज पर क्या परिणाम होते है ये सकारात्मक होते है या नकारात्मक उदाहरण देकर सिद्ध करें ?

प्र. 9. मूल्यों के विकास में परिवार समाज तथा शिक्षा संस्थाओं की क्या भूमिका होती है। अपने जीवन के उदाहरण देकर स्पष्ट करें ?

नियतिवाद (**Determinism**)

- जब कुछ पहले से ही पता हो ।
- 'एथिक्स'– ऐसे ही लिखना है ।
- 'एथिक्स' नैतिक व्यवस्था के रूप में व्यक्त करते हुऐ लिखना है ।

- 'एथिक्स'
  - दर्शन में इसे मूल्य मीमांसा (Axiology) भी कहते है ।
  - सामाजिक नैतिक व्यवस्था (Social Moral Order)

एथिक्स' शब्द का प्रयोग दो संदर्भो में होता है – पहले संदर्भ में यह दर्शन शास्त्र की शाखा है जिसे नीतिशास्त्र या नीतिभाषा कहते है । मूल्य मीमांसा (Axiology) भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होने वाला शब्द है ।

दूसरे अर्थ में नैतिकता का अर्थ नैतिक नियमों व प्रतिमानों से है, जो किसी भी समाज में नैतिक व्यवस्था को बनायें रखने के लिए प्रयोग में आते है ।

यदि एथिक्स को दर्शन शास्त्र की शाखा के रूप मे देखें, तो इसकी महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित है –

- यह एक मानकीय विषय है ना कि वणर्नात्मक (**Normative**) । इसका अर्थ है कि यह भौतिक विज्ञान की तरह सिर्फ अपने जगत की व्यवस्था नहीं करता या सिर्फ क्या है, का उत्तर नहीं देता । बल्कि यह भी बताता है कि क्या होना चाहिए' । दूसरे शब्दों में, यह समाज का यथार्थ बताने के साथ-साथ उसके लिए आदर्शों को भी गढता है ।

नीतिशास्त्र समाज में रहने वाले सामान्य वयस्कों के ऐच्छिक कर्मों तक अपना विश्लेषण सीमित रखता है । इसमें तीन बाते महत्त्वपूर्ण है –

1. नीतिशास्त्र का सम्बन्ध सिर्फ सामाजिक मनुष्यों से है । यदि हम कल्पना करें कि यदि कोई मनुष्य समाज से अलग रहता है, तो वह नीतिशास्त्र के दायरे में नहीं आयेगा ।
2. केवल सामान्य वयस्कों के कर्मों का मूल्यांकन किया जाएगा बहुत छोटे बच्चो या असामान्य/विक्षिप्त वयस्कों को इस दायरे में नहीं रखा जायेगा ।
3. नीतिशास्त्र सिर्फ ऐच्छिक कर्मो अर्थात आचरण (**Conduct**) का मूल्यांकन करता है । ऐसे कर्मों कर नहीं जो अनैच्छिक हो या संकल्प की स्वतंत्रता के अभाव में किये गए हो ।

'एथिक्स' का दूसरा अर्थ ज्यादा महत्त्वपूर्ण और व्यापक है । इस अर्थ में नैतिकता या नैतिक व्यवस्था विश्व के प्रत्येक समाज में देखी जा सकती है ˙ इस नैतिकता या नैतिक व्यवस्था के प्रमुख लक्षण निम्नलिखित है :-

1. भूल (Error) – जो पूरी तरह से बिना जानकारी के हुआ वह भूल है ।

2. पाप (Sin) – माना कि सैर करते समय कोई मेढक पैर के नीचे आकर मर जाये तो वह पाप है ।

4. अपराध (Crime) – रेड लाइट क्रास कर जाना अपराध है ।

महत्त्वपूर्ण तथ्य –

- जो नैतिक रूप से गलत है वह 'पाप' है।
- कानूनी रूप से गलत है वह 'अपराध' है।
- जो नैतिक व कानूनी रूप से गलत है पाप + अपराध है।
- यदि पाप किया है, तो मन में अपराध बोध (**Guilt Feeling**) होगा।
- नैतिकता अभ्यास से आती है ना कि जन्मजात होती है।

1. नैतिक व्यवस्था या नैतिकता अपनी प्रकृति में सार्वभौमिक (Universal) व सार्वमालिक है। किन्तु सिर्फ इस अर्थ में कि यह प्रत्येक मानव समाज में पायी जाती है। आदिय से आदिय जन जातीय समाज से लेकर अधिकतम विकसित समाज में इस व्यवस्था की उपस्थिति देखी जा सकती हैं।

2. नैतिकता मनुष्य की जन्मजात या वंशानुगत विशेषता नहीं है। उसे सीखना पडता है। जब कठोर अभ्यास से कोई नैतिक मूल्य व्यक्ति के जीवन का सामान्य हिस्सा बन जाता है, तो उसे सद्गुण (**Virtue**) कहते है। यदि व्यक्ति नैतिकता का अभ्यास ना करें और अपनी प्रवृत्तियों के वंशीभूत हो जाए, तो उसमें (Vices) दुर्गणों का विकास होता है।

3. नैतिकता एक गत्यातमक (Dynamic) अवधारणा है। अर्थात् देशकाल परिस्थितियों से प्रभावित होती है। कुछ नैतिक मूल ऐसे है जो लगभग हर समाज में हमेशा माने जाते है, जैसे – ईमानदारी, शांति, सहयोग आदि जबकि कुछ नैतिक मूल्य ऐसे होते है, जो समाज की विशेष परिस्थितयों से निर्धारित होते है जैसे- आजादी, आदिय, या पिछडे समाजों में साहस और वीरता जैसे मूल्य केन्द्र मे होते है जबकि विकसित या सम्पन्न समाजों में शांति या सहअस्तित्व व सहिष्णुता जैसे मूल्य प्रमुख हो जाते है।

4. हर नैतिक व्यवस्था अपनी प्रकृति में परामर्श देने वाली होती है अर्थात् वह बताती है कि विभिन्न परिस्थितियों में प्रत्येक व्यक्ति को क्या करना चाहिए और क्या नहीं।

5. नैतिक व्यवस्था अनिवार्यतः कानूनी व्यवस्था के सामानान्तर नहीं होती। ऐसा हो सकता है कि किसी कृत्य को नैतिक व्यवस्था गलत माने किन्तु कानून गलत ना मानें जैसे – पशु हिंसा तथा पेड-पौधों के प्रति गलत व्यवहार दूसरी ओर ऐसा भी हो सकता है कि कानून किसी कृत्य का अपराध घोषित करें – किन्तु समाज की नैतिकता उसे गलत न माने जैसे कुछ क्षेत्रों में बहुपत्नी व दहेज प्रथा एक समय तक सती प्रथा भी कानूनी दृष्टि से अपराध थी जबकि समाज के एक बडे हिस्से की उसमें नैतिक आस्था बनी हुई थी।
6. नैतिक व्यवस्था दो प्रकार के दबावों से संचालित होती है – आन्तरिक तथा बाह्य आन्तरिक दबाव का अर्थ इस बात से है कि बच्चों में बचपन से ही ऐसे मूल्य और संस्कार भरे जाते है कि अनैतिक कृत्य करने या उसकी इच्छा होने से उनका मन अपराध भावना से भर उठें।

बाह्य दबाव का अर्थ है कि समाज के अन्य सदस्य या अलोचना या निषेधों आदि के माध्यम से व्यक्ति के अनैतिक व्यवहार को नियन्त्रित करते है। (गौरतलब है कि कानून बाह्य दबावों से संचालित होता है अर्थात् दण्ड के भय से जबकि नैतिक व्यवस्था में मुख्य भूमिका आन्तरिक दबाव की होती है।)

Objective	Subjective
वस्तुनिष्ठ परक	व्यक्तिनिष्ठ परक

विषयानिष्ठ परक	आत्यनिष्ठ परक
• समान होने की बाह्यता (सभी की राय समान हों)	• मेरी राय में
• तथ्य objective	• राय **Subjective** है ।

7. इस प्रश्न पर गम्भीर विवाद है कि नैतिक व्यवस्था वस्तुनिष्ठ है या आत्यनिष्ठ । वास्तविकता यह है कि सम्पूर्ण नैतिक व्यवस्था को एक वर्ग में रखकर फैसला नहीं किया जा सकता है ।

कुछ बुनियादी नैतिक प्रतिमान ऐसे होते है जो समाज के अस्तित्व के लिए जरूरी है और कुछ अपवादों को छोडकर सारा समाज उन्हें स्वीकार करता है । ऐसे प्रतिमान लगभग वस्तुनिष्ठ होते है जैसे सामान्य स्थितियों में किसी मनुष्य का वध ना करना, बलात्कार ना करना किसी बच्चें को चोट ना पहुँचाना ।

नैतिक मानदण्डों के विभिन्न स्तर होते है और उनकी वस्तुनिष्ठता उसी अनुपात में कम या ज्यादा हो जाती है । कभी-कभी समाज के विभिन्न समुदाय अलग-अलग मानदण्डों का समर्थन करते है । एक समुदाय के भीतर वस्तुनिष्ठ बनी रहती है किन्तु दोनों सुमदायों की तुलना की दृष्टि से नैतिक नियम आत्मनिष्ठ हो जाते है । जैसे - कुछ हिन्दुओं में संगोत्र विवाह अनैतिक माना जाता है जबकि मुसलमानों में परिवार के भीतर विवाह नैतिक माना जाता है ।

इसी प्रकार जहाँ जैन और वैष्णव पशु हिंसा को पूर्णत अनुचित मानतें है वही मुस्लिम, ईसाई, यहूदी, सिक्ख व शाक्त समुदाय पशु हिंसा को अपने धार्मिक आचरण का हिस्सा मानते हैं, कई नैतिक मूल्य और नियम ऐसे भी है जिसमें वस्तुनिष्ठता का स्तर काफी कम होता है । किसी अल्पसंख्यक समुदाय जैसे - भारत में पारसी समुदाय के नैतिक नियम इस वर्ग में आ सकते है । इसी प्रकार जिन व्यक्तियों का नैतिक आचरण बहुत ऊँचा होता है, उनके स्तर पर भी अधिकांश समाज नहीं पहुँच पाता है जैसे - पश्चिम में ईसा मसीह, सुकरात जबकि भारत में महात्मा गाँधी, भगत सिंह, दधिचि और शिवि जैसे व्यक्तियों ने जैसे मानदण्डों को चुना वहाँ तक समाज के बहुत कम लोग ही पहुँच सकते है । सार यह है कि नैतिक व्यवस्था न तो केवल वस्तुनिष्ठ होती है और न केवल आत्मनिष्ठ जबकि कुछ मूल्यों में वस्तुनिष्ठ ज्यादा होती है तथा शेष मानदण्ड कठिनाई के स्तर के कारण आत्मनिष्ठ की ओर उन्नमुख होते है ।

प्रश्नः- नैतिक व्यवस्था की जरूरत क्यों पडती है इसके क्या लाभ है ।

Thomas Hobbes	**Aristotle** (अरस्तु)
➢ कहा की हर व्यक्ति हर व्यक्ति का शत्रु है । ➢ नैतिकता का संबंध राज्य की शक्ति से है।	• व्यक्ति को व्यक्ति राज्य ही बचाता है।

1. आत्मनिष्ठता कम हो जाती है ।
2. समाज का बहुत सारा समय बच जाता है ।

जैसे -

- यदि कोई बच्चा बचपन में समाज से अलग हो जाये । तो उस पर कोई नीतिशास्त्र लागू नहीं होगा ।

- मतलब ये कोई समाज शास्त्र या नैतिकता से सम्बध नही रखते है ।
- मजबूरी में किया गया कर्म 'निरनैतिक' कहलाता है ।

नैतिक व्यवस्था की जरूरत

1. आत्मनिष्ठता कम हो जाती है ।
2. समय की बचत होती है । जैसे-यदि नैतिक व्यवस्था बनी हुई है, तो निश्चित हो जाता है कि हमें क्या करना है यह सोचने में व्यर्थ नहीं होता है कि क्या करें ।
3. समाज की अराजकता को कम करना ।
4. वस्तुनिष्ठता बढ जाती है ।
5. बल (**Force**) – नैतिकता के पीछे धर्म का बल कार्य करें तो जीवन भी छोडने के लिये तैयार रहता है ।

"सिग्मन फ्राईड"

- **ID** (ईड)
- वासनाएँ
- मूल प्रवृत्तियाँ
- **ID** जन्मजात (**Genetic**) होती है ।

परम अहम (Super Ego)

- नैतिक मन
- जो चीजे नैतिक बताकर सिखाया जाये तो वह परम अहम है ।
- अर्न्तआत्मा कुछ नहीं है परम अहम होती है ।
- समाजीकरण से संस्कार को बढाना ।
- पशुओं मे परम अहम नहीं होती है । इनके ऊपर नैतिक दबाव नहीं होता है ।

नैतिकता की विकास की आवश्यकताएँ या विकास की स्थितियाँ

- सामाजिक आवश्यकता **Social Need**
  - हर समाज में सामाजिक आवश्यकता अलग-अलग होती है ।
  - सामाजिक आवश्यकता से मूल्य (मूल्य) पैदा होते है ।
  - कुछ मूल्य सार्वभौमिक होते है तथा कुछ समाज से पैदा होती है ।
  - **Value** अमूर्त होती है जिसे महसूस किया जा सके या सोचा जा सकें ।
  - इन्द्रियों के द्वारा महसूस नहीं किया जा सकता है, केवल सोचा जा सकता है ।

समाज में झगडा	Need	शांति
भौगोलिक कारणो की वजह से सुस्ती	Need	स्फूर्ति
समाज में खर्चीले लोग	Need	संयम
पानी की कमी	Need	मितव्ययता

सामाजिक मूल्य को क्रियान्वयन करने के लिए सामाजिक प्रतिमान की आवश्यकता होती है ।
जो कि एक मूर्त अवधारणा है ।
जैसे – माता–पिता के सम्मान में पैर छूना (Norm) है ।

- धर्म निरपेक्ष नैतिकता में विचलन ज्यादा होता है ।
- धर्म रहित नैतिकता में विचलन नही होता है ।
- प्रतिमान का उल्लघंन करने पर कोई विशेष दबाव (तनाव) नहीं होता है ।

क्या नैतिक व्यवस्था भीतर से अनैतिक होती है ।

- जब भी कोई भी प्रतिमान/नियम/कानून बनातें है, तो वह कुछ के लिए लाभदायक या कुछ के लिए हानिकारक है परन्तु अधिकतम लोगों के लाभ वाले प्रतिमान सही माना जाता है ।
- मार्क्सवाद व नारीवाद व अम्बेडकरवाद
- **Post Modirnisum** (उत्तर–आधुनिकवाद)
- आदिवासी विमर्श

मार्क्सवाद, (मार्क्स, ग्राम्सी, अल्थूजर) के अनुसार समाज 2 वर्गो में विभाजन होता है ।

अमीर वर्ग	गरीब वर्ग
• नैतिक मूल्य अमीरो द्वारा बनाये जाते है • हिंसा नहीं, चोरी नही • शैक्षणिक निकाय • धार्मिक निकाय • नीति निकाय • विद्रोह की भावना मन में रहे तकि गरीबों के मन मे अमीरो के खिलाफ विद्रोह न रहे ।	• गरीबों को विद्रोह नहीं करने देना है । • धर्म और रीतिरिवाज एक ऐसा रूप गढते है कि गरीब लोग अपना हक ना माँग पाये ।

नैतिक व्यवस्था/नैतिक नियम कैसे बनते है :-

किसी भी नैतिक नियम के बनने की प्रक्रिया दीर्घकालिक होती है । सबसे पहले समाज, समुदाय या संस्थान एक ऐसी आवश्यकता महसूस करता है कि इसे अपना अस्तित्व बनाऐ रखने या सुचारू रूप से चलाने के लिए किसी नैतिक मूल्य की व्यक्तियों के भीतर आवश्यकता है । जैसे – अगर किसी समाज में लोगों में बात-बात पर झगडे होते है । तो वहाँ शान्ति नैतिक मूल्य के रूप में उभरेगी । अगर समाज में उत्पादन की कमी है । तो किफायत या मितव्यता, अगर प्रदूषण ज्यादा है, तो पेड पौधों के प्रति प्रेम जैसे मूल्य वहाँ स्वभाविक रूप से पनपेगें ।

समस्या यह है कि नैतिक मूल्य अमूर्त होते है । अर्थात् इन्हें सोचा समझा तो जा सकता है किन्तु इन्द्रियों से अनुभव तो नहीं किया जा सकता है, कुछ बुद्धिमान लोग सिर्फ मूल्यों के स्तर पर रहकर सामाजिक संस्था का रूप धारण कर लेते है । विवाह एक संस्था है, संस्था के स्तर पर आकर वह नैतिक नियम पूर्णतः व्यवस्थित हो चुका होता है ।

लाभ व हानियाँ :-

नैतिक नियमों का लाभ यह है कि लोग बिना सोच विचार किये अपनी आदतों के रूप नैतिक व्यवहार करने लगते है और समाज में व्यवस्था बनी रहती है ।

इसका नुकसान यह है कि कभी-कभी नैतिक नियम तर्क विरोधी होकर भी बने रहते है और समाज का नुकसान करतें है । जैसे-पेडों को पानी देने का नियम गर्मियों के लिए अच्छा है किन्तु उसका प्रयोग मानसून में भी होता है जो नुकसान पहुँचा सकता है पडोसियों के साथ भोजन करने का अनिवार्य नियम किसी गरीब व्यक्ति के लिए घातक हो सकता है, अगर उसके पास पर्याप्त संसाधन नहीं है ।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि जिस कारण से कोई नैतिक मूल्य तथा नैतिक नियम बना था । वह समाप्त हो गया हो और विपरीत परिस्थितियों में भी नैतिक नियम रूढियों की तरह चलते रहे ।

पशु बलि के सन्दर्भ में कई विचारक ऐसा तर्क देते है । जनसामान्य को नैतिकता अधिक मूर्त तथा ठोस रूप में चाहिए होती है । इस आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए मूल्यों से प्रतिमान (Norms) बनाए जाते है और समाज से अपेक्षा की जाती है, कि उनका पालन करे जैसे-अगर मूल्य पेड पौधों को संरक्षण है तो ऐसा प्रतिमान बनाया जा सकता है कि किसी वृक्ष को पानी देकर ही भोजन किया जाना चाहिए । इसी प्रकार अगर शांति का मूल्य आपेक्षित है, तो नैतिक प्रतिमान यह हो सकता है कि अपने पडोसियो से गले मिलना आवश्यक है या सप्ताह में एक बार उनके साथ भोजन करना जरूरी है

प्रतिमान नैतिक व्यवस्था को वस्तुनिष्ठता प्रदान करते है, किन्तु इनकी मजबूती के लिए जरूरी है कि इनके पास मे सामाजिक दबाव बनाया जाए, तो लोग प्रतिमानों का नियमित पालन करते है । समाज उन्हें विशेष सम्मान देता है, जबकि प्रतिमानों को भंग करने वालों को तिरस्कार झेलना पडता है । इससे नैतिक प्रतिमान मजबूत होते है धीरे-धीरे वे प्रथा, परम्परा तथा लोक नीतियों का रूप धारण कर लेते है और हर अगले चरण के साथ अधिक मजबूत होते है ।

अनैतिकता

- मार्क्सवाद– वर्ग के स्तर पर
- उत्तर–आधुनिकता की विचारधारा
- नारीवाद
- अम्बेडकरवादी
  1. गीता
  2. जाति

Women are not born, it is Made- सिमॉन्ड

अम्बेडकरवादी के अनुसार
- जातिवाद अनैतिक है ।
- धर्म से आपत्ति है ।

गीता के अनुसारः– धर्म का मतलब वर्ण धर्म से है ।

वर्णधर्म–साधुओं की रक्षा, दुष्टों का अन्त

उत्तर–आधुनिकता की विचारधारा
- छोटे–छोटे समूह बनाकर सबकी विचार धारा सबकी अपनी और अपने अनुसार नैतिक ढाँचा तैयार करें ।
- सबकी अपनी विचारधारा और अपना दृष्टिकोण होता है, यही उत्तर–आधुनिकता बढती है ।
- सबकी अपनी नैतिकता होनी चाहिए, उसे किसी के ऊपर थोपना नहीं है ।

नैतिक व्यवस्था भीतर से अनैतिक क्यों होती है –

हर नैतिक व्यवस्था के भीतर कुछ ऐसे तत्व होते है, जो उसे अनैतिक सिद्ध करते है ।
इस बात की व्याख्या दो प्रकार से की जा सकती है । पहले स्तर पर हर नैतिक व्यवस्था में कुछ न कुछ रूढियाँ पनपती है जो समाज की वर्तमान आवश्यकताओं के पक्ष में नही बल्कि उनके विरूद्ध काम करती है जैसे–वर्तमान संकट पर्यावरण प्रदूषण का है और दीपावली जैसे – त्यौहार जिन्हें मानना हिन्दुओं के नैतिक कर्त्तव्य की तरह है, नुकसान करता है ।
दूसरा पक्ष यह है कि नैतिक व्यवस्था चाहे जितनी भी सावधानी से बनायी जायें, वह समाज के कुछ समूहों को लाभ पहुँचाती है जबकि कुछ समूह तुलनात्मक रूप से नुकसान में रहते है, यह दृष्टि कोण कई विचारधाराओं की ओर से प्रस्तुत किया गया है जिनमें से कुछ का संक्षिप्त परिचय निम्न है :–

(क) मार्क्सवाद :– मार्क्सवाद के अनुसार वर्ग विभेद को बनाये रखने के प्रयास मात्र है । हर समाज दो वर्गों अमीर व गरीब वर्ग में बँटा हुआ है । अमीर वर्ग चाहता है, उसकी सम्पत्ति तथा संसाधन सुरक्षित रहे और गरीब लोग उसके विरूद्ध क्रांति न करे । डरा–धमका कर शोषण की व्यवस्था लगातार नहीं चलाई जा सकती व्यवस्था की निरन्तरता के लिए जरूरी है, कि वंचित व्यक्तियों को वचन की अनुभूति से और विद्रोह चेतना से दूर रखा जाए । यह काम उनके वैचारिक अनुकूलन (Ideological Coalition) के द्वारा किया जाता है । धर्म और शिक्षा, नैतिक व्यवस्था इसी के साधन

है । उच्च वर्ग गरीबों के मन में ऐसे नैतिक मूल्य बैठा देता है, जो वस्तुत अपने पक्ष में होते है । जैसे–चोरी ना करना, हिंसा न करना धैर्य रखना, क्षमा कर देना, ईश्वर में आस्था रखना, अपने कर्मों के बदलें फल की कामना न करना ये सभी मूल्य वस्तुत अमीर पूँजीपतियों को ही लाभ पहुँचाते

(ख) <u>नारीवाद</u> :- नारीवादियों का दावा है कि दुनिया के हर समाज में पुरूषों को अवैध लाभ पहुँचाती है और नारियों का वचन करती है जैसे- नारियों से अपेक्षा की जाती है कि उनमें त्याग, ममता, धैर्य, विनम्रता सत्यनिष्ठा, जैसे – मूल्य भरपूर मात्रा मे होने चाहिए क्योंकि ऐसे मूल्यों का लाभ पुरूषों को ही मिलता है । परिवार में शक्ति का वितरण हो या पैत्रिक सम्पत्ति का वितरण हो पुरूषों को हर जगह प्राथमिकता मिलती है । यह व्यवस्था पुरूषों को अधिकाधिक अधिकार व महिलाओं को अधिकाधिक कर्त्तव्य देती है । इसलिए यह नैतिक नही अनैतिक है ।

धार्मिक और अनैतिक

Religion and Morality

R ✓ M ✓	R ✓ M ✗	R ✗ M ✓	R ✗ M ✗
दान	पशु बलि, बच्चों की बलि देवदासी प्रथा	अंग दान, रक्त दान, पीने के लिए देना, चैराठी देना	हत्या करना, बलात्कार, और कोई भी अपराध

- न तो धर्म के लिए नैतिकता आवश्यक है और न ही नैतिकता के लिए धर्म की आवश्यकता है ।

दो वर्गों पर विचार करते है –

1. धर्म नैतिकता के लिए आवश्यक है ।
2. धर्म नैतिकता के लिए अनावश्यक/विरोधी है ।

Religion & Morality

धर्म आवश्यक	धर्म अनावश्यक/विरोधी
❖ महात्मा गाँधी • नैतिकता ईश्वर का आदेश है । • धर्म से नैतिकता में मजबूती आती है । • धर्म व्यक्तियों की जिज्ञासा संतुष्ट करके उसके व्यक्ति को सन्तुष्टि मिलती है । • कर्म सिद्धान्त	❖ मार्क्स ❖ भगतसिंह • प्रत्येक मनुष्य परिपक्व है । उसे खुद से तय कर लेना चाहिए कि हमें अनैतिक काम करने है । • धर्म के कारण नैतिकता में रूढ़िया पैदा होती हैं, जैसे – कुछ ऐसी भी रूढ़िया है जो मानव विरोधी है । • कर्म के कारण नैतिकता की वस्तुनिष्ठा कम हो जाती है । • धर्म अपने आप में अमीरों द्वारा बनाई गई व्यवस्था है । • धर्म नैतिकता में भेद-भाव लाता है । • जो धर्म निरपेक्ष (सभी धर्मों को मानने वाला) होता है । उसके धर्म नैतिकता में लचीलापन होता है ।

किसी समाज के नैतिक नियमों के निर्धारक तत्व

भौगोलिक कारण

भौगोलिक स्थिति ज्यादातर यह तय करते है कि क्या करना नैतिक है और क्या अनैतिक है ?

1. कृषि
   शाकाहार – जहाँ भोजन उत्पादन सही है, वहाँ लोग शाकाहारी होते है ।
   माँसाहार – जहाँ भोजन उत्पादन कम है, वहाँ माँसाहारी होना नैतिक है ।

2. शराब पीना नैतिक है, जहाँ के प्रदेशों में सर्दी होती है ।

जनांकिकी (Sex Ratio)	पुरूष 1000 एक विवाह	1050 (महिला) बहुपत्नी विवाह 800 (महिला) जब महिला ज्यादा होगी (1500) जहाँ युद्ध प्रथा होगी वहाँ महिला ज्यादा होगी ।

निर्धारक तत्व

1. भौगौलिक कारण– किसी समाज की नैतिकता या समाज को नियमो को तय करने का कारण भौगोलिक कारण होता है ।

2. जनांकिकी–किसी क्षेत्र में पुरूषों की संख्या का महिलाओं की संख्या भी नैतिक तत्वों के निर्धारक तत्व होता है ।
   पुरूष 1000
   महिलाएँ 985
   महिलाओं में जीवन प्रत्याशा ज्यादा होती है पुरूषों के मुकाबले

3. आर्थिक कारण
   - अर्थव्यवस्था किस Modal पर चलती है ।

पूँजीवाद **(Capitalist)**	समाजवाद **(Socialist)**
इसका सबसे बडा मूल्य साहस से तात्पर्य है ।	समानता
उद्यम करने के साहस से तात्पर्य है ।	न्याय
यहाँ समानता ज्यादा स्वतंत्रता पर बल होता है	मानवाधिकार

- **Activities**– प्राथमिक या द्वितीयक क्रियाऐं किस पर आधारित है ।
  अमेरिका समाज में मूल्य बहुत तेजी से धसे हुए है ।

  प्राथमिक क्षेत्र :– कृषि 1. पर्यावरण मित्रता 2. भाईचारा केन्द्र में होगा ।
  तृतीयक क्षेत्र – सेवा
  1. गतिशीलता होनी चाहिए ।
  2. विश्व नगर–विश्व के अधिकांश लोग जिस (देश) शहर में रहते है ।
  3. लचीलापन होता है ।

4. राजनीतिक –

लोकतन्त्र	राजतन्त्र/अल्पतन्त्र
• समानता का मूल्य होगा • आजादी का अभाव होगा	• आज्ञापालन (राजतन्त्र की पहचान है)

5. ज्ञान का विकास स्तर –

0-5	नियम नहीं मानना
5-9	नियम Absolute होता है
9+	नियम केवल साधन है

Ethics

Branches of Ethics in Technical Form

De-Ontology	Teleology	Virtue Ethics
• इसमें नियम महत्वपूर्ण है प्रयोजन को इसके परिणाम से कोई मतलब नहीं है । • परिणाम निरपेक्ष • पैट्रिक नॉविल स्मिथ द्वारा दिया गया । जैसे :– जिस बात का जवाब न देकर ईश्वर या अल्लाह के ऊपर छोड कर जवाब देना । "ईद पर बकरा काटना" जैसे :– हमें नैतिक नियम नहीं नैतिक प्रायोजन होना चाहिए ।	• प्रयोजन को महत्व देना • परिणाम सापेक्षवाद • इसमें अपने विवेक का प्रयोग करना है ।	• सद्गुणों को महत्व देना